7. फिनरौट

रोगाणुः स्यूडोमोनास एसेमोनास अथवा फ्लेक्सीबेक्टर बैक्टीरिया।

लक्षणः कमजोर पंख हल्के गुलाबी – श्वेत किनारे व पंखों पर कुछ खून के धब्बे।

कारणः बैक्टीरिया सभी मछलियों पर होते हैं, परन्तु अशुद्ध परनी के कारण संक्रमण फैलाता है। अथवा घाव में फंफूदी का संक्रमण अधिक फैलता है।

कार्यवाहीः पानी को शुद्ध रखें। काटी गई मछलियों को अलग रखें।

उपचारः रोग को फैलने से बचाने के लिए फिनरौट अथवा एन्टी – बैक्टीरियल दवा से उपचार करें। 1–3 ग्राम/लीटर नमक घोलें। यह सुनिश्चित करें कि उपचार के दौरान पानी शुद्ध हो।

8. स्विमब्लैडर अव्यवस्था

रोगाणुः बैक्टीरिया, आहार की पोषक कमियां, फंसी हुई हवा, भौतिक कुरुपता।

लक्षणः मछली को सतह पर तैरने में कठिनाई। प्रायः सजावटी मछली गोल्ड फिश को संक्रमित करता है।

कारणः पानी की अशुद्धियां, अनुवांशिक कारण।

कार्यवाहीः पानी की गुणवता बनायें रखें । सुखा आहार कम दें जो पेट में जाकर फूल जाये डेफनिया पेट साफ करने में सहायक होता है, अतः इसे आहार में दें।

उपचारः आहार में बदलाव लाकर पानी की गुणवता बनायें रखें। एन्टी – बैक्टीरिया दवा दें। अनुवांशिक कारण ठीक नहीं किये जा सकते।

9. लिम्फोसिस्टिस

रोगाणुः इरीडोवाइरस।

लक्षणः त्वचा व पंखों पर कड़े ग्रे– श्वेत रंग के धब्बे। यह धब्बे आकार में बढ़ी हुए कोशिकाएं होती हैं।

कारणः तनाव, अशुद्ध पानी।

कार्यवाहीः इससे प्रायः मछली की मृत्यु नहीं होती परन्तु यदि पुनः संक्रमण हो तो मछली अलग कर लें।

उपचारः इस रोग हेतू कोई उपचार नहीं है। कुछ विशेषज्ञ घाव को काटकर अलग करने का परामर्श देते हैं ।

मछली का बीमारी से उपचार

आमतौर पर कार्प जाति की मछलियों को बीमारी कम ही लगती है। फिर भी कभी ऐसी समसया का सामना करना पड़े तो निम्नानुसार उपचार करेंः–

1. हल्दी व चूने के मिश्रण का उपयोगः–

एक हैक्टेयर जलक्षेत्र हेतु 10 कि0ग्रा0 हल्दी पाउडर तथा 100 कि0ग्रा0 चूने का मिश्रण दर्शाई गई विधि द्वारा तैयार करें तथा तालाब में छिड़क दें।

विधिः– शाम के समय बाल्टी में पानी भर लें तथा उसमें चुना डाल दें। 2–3 घण्टे तक इसे ठण्डा होने दें तथा बाद में वांछित (निश्चित) मात्रा में हल्दी पाउडर डाल दें। पूरी रात भर इसे पड़ा रहने दें तथा प्रातः तालाब में छिड़क कर बार–बार जाल घुमाएं ताकि मिश्रण पानी में अच्छी तरह मिल जाए। उपरोक्त मिश्रण की आधी मात्रा प्रत्येक माह तालाब में प्रयोग करनी चाहिए। एक बीघा जलक्षेत्र के लिए 1.250 कि0ग्रा0 हल्दी पाउडर तथा 12.5 कि0ग्रा0 चूने का मिश्रण तैयार करना चाहिए।

2. लहसुन एवं चट्टानी नमक का प्रयोगः–

मछली की परजीवी सम्बंधी बीमारियों के नियंत्रण हेतु 10 कि0गा0 लहसुन व 100 कि0ग्रा0 चट्टानी नमक (रॉक साल्ट) के घोल को तैयार करके प्रति हैक्टेयर प्रयोग किया जाता है। पहले लहसुन को बारीक पीस लिया जाता है, तत्पश्चात् निश्चित मात्रा में गोमा नमक मिलाकर इस घोल को बाल्टी में 2–3 घण्टे पड़ा रहने दिया जाता है। उसके पश्चात् तालाब में इसका प्रयोग किया जाता है। एक बीघा जलक्षेत्र हेतु इसकी मात्रा भी 1.250 कि0ग्रा0 लहसुन तथा 12.5 कि0ग्रा0 चट्टानी नमक होगी।

सम्पर्क सूत्रः मत्स्य भवन
मात्स्यिकी निदेशालय, हिमाचल प्रदेश,
चंगर सैक्टर– बिलासपुर– 174 001
फोन/फैक्सः 01978–224068
ई मेल: fisheries-hp@nic.in
वैबसाईट: hpfisheries.nic.in

रा0 मु0 हि0 प्र0, शिमला–1829–मत्स्य–2015–01–05–2015––500 प्रतियां।

सामान्य मत्स्य रोग व उपचार

मात्स्यिकी निदेशालय
हिमाचल प्रदेश, बिलासपुर।

1. नासूर (ulcer)

रोगाणुः स्यूडोमोनास (*Pseudomonas*) व एरोमोनास बैक्टीरिया ।

लक्षणः गुलाबी श्वेत खुले घाव , अधिकतर श्वेत किनारे वाले व कभी कवक अथवा अन्य बैक्टीरिया से संक्रमित।

कारणः गन्दा पानी अथवा उच्च PH स्तर हल्की खंरोच में भी संक्रमण के कारण स्थिति खराब हो सकती है। आयात की गई कोई (Koi) फिश व गोल्ड (Gold) फिश में भी संक्रमण हो जाता है।

कार्यवाहीः जल को अमोनिया अथवा नाइट्राइट के लिए जोच करवायें। प्रदूषण से बचने के लिए जितना संभव हो उतने पानी की मात्रा को बदल लें।

उपचारः मछली के खुले घाव से लवण का परिग्रहण होता है। इसलिए एक्वेरियम में 1–3 ग्राम प्रति लीटर की दर से नमक डालें। अत्यधिक संक्रमण होने पर किसी चिकित्सक से परामर्श लें।

2. धुंधली आंखें

रोगाणुः आंख की पर्णकृमि (Fluke) eg. डिपलोस्टोमम (*Diplostomum*), कॉर्नीया को क्षति बैक्टीरिया संक्रमण।

लक्षणः आंख अथवा उसका लेंस पूरी तरह से अपारदर्शी हो जाता है व बाहरी सतह पर चिपचिपा पदार्थ (Mucus) बन जाता है।

कारणः सबसे प्रमुख कारण है गंदा पानी। आहार में वीटामिन की कमी के कारण भी यह रोग होता है।

कार्यवाहीः पानी की गुणवता को सुधारें व मछली के आहार में वीटामिन अवश्य मिलायें।

उपचारः सबसे असरदार उपचार पानी की गुणवता को सुधारना है। यदि पर्णकृमि संक्रमण हो, तो उसे ठीक कर पाना कठिन होता है।

3. ड्राप्सी

रोगाणुः बैक्टीरिया, वाइरस, आहार, मेटाबोलिक अथवा औस्मोरेगुलेटरी समस्याओं के कारण।

लक्षणः शरीर में पानी जमा होने के कारण फुलावट चन्ने नोकीले उठे हुए। आंखे बाहर निकली हुई।

कारणः अधिकतर गंदे पानी के कारण, प्रमुखतः अमोनिया नाइट्राइट।

कार्यवाहीः पानी की गुणवता को सुधारें व एक्वेरियम में 1–3 ग्राम प्रति लीटर की दर से नमक मिलायें।

उपचारः उपचार कठिन होता है। कई एन्टी– बैक्टीरिया दवाओं से उपचार संभव है।

4. सफेद दाग

रोगाणुः इक्थीयोफ्थाइरीयस मल्टीफीलिस (*Ichthyophthirius multifilis*)।

लक्षणः त्वचा, पंख व गलफडों पर नमक के दाने के आकार के सफेद दाग।

कारणः तनाव संबंधी प्रायः पानी की अशुद्धियों, बदलते तापमान, अथवा गन्दगी के कारण। संवेदनशील प्रजातियां नए एक्वेरियम में रखने पर भी संक्रमित हो जाती है।

कार्यवाहीः पानी को प्रदुषण रहित रखना सुनिश्चित करें व तनाव के कारण जानकर उनका निवारण करें।

उपचारः परजीवी के उपचार के लिए दवा दें। दवा के उपयुक्त प्रभाव के लिए जल का तापमान बढायें। परजीवियों द्वारा दिए गए घाव में पुनः संक्रमण हो सकता है।

5. बैक्टीरियम संक्रमण

रोगाणुः स्यूडोमोनास (*Pseudomonas*) व एरोमोनास (*Aeromonas*) बैक्टीरिया।

लक्षणः त्वचा व पंखों में लालगीः खुरदरे संक्रमित पंख, खुले घाव । अन्य फंफूदी ग्रसित घाव ।

कारणः पानी में अमोनिया व नाइट्राइट के कारण स्थानान्तरण लडाई अथवा गलत प्रकार से मछली पकडने पर लगे घाव में भी संक्रमण हो सकता है।

कार्यवाहीः पानी को शुद्ध रखें व तुरंत उपचार करें।

उपचारः एक्वेरियम में 1–3 ग्राम प्रति लीटर की दर से नमक डालें। अत्यधिक संक्रमण होने पर विशेषज्ञ की सलाह लें।

6. फंफूदी

रोगाणुः सेपरोलेगनिया (*Saprolegnia*) व एचलीया (*Achlya*)।

लक्षणः त्वचा व पंखों पर रोयेंदार घाव।

कारणः प्रायः नासूर अथवा परजीवी द्वारा बनाए घावों में पुनः संक्रमण के कारण। यदि पानी शुद्ध हो तो यह समस्या नहीं आती।

कार्यवाहीः पानी को शुद्ध रखें व तुरंत उपचार करें।

उपचारः फंफूदी नाशक जैसे कि मिथाईलीन ब्लू (Methylene Blue) काफी असरदार होते है। परन्तु पानी पर दुष्प्रभाव डाल सकते हैं। यदि संक्रमण खुले घाव पर हो तो एक्वेरियम में 1–3 ग्राम प्रति लीटर की दर से नमक डालें। फ्लेक्सीबैक्टर नामक बैक्टीरिया से होने वाली बीमारी कॉटन – वूल इसी के समान लगती है परन्तु इसका उपचार पूर्णतया भिन्न होता है।